

'गप्पू' को झप्पी भरने वाला 'पप्पू' तो नहीं हो सकता

झूठकी राजनैतिक स्वीकार्यता का सच

विवेक की विशेष रिपोर्ट

लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पर बहस के दौरान 'पप्पू' राहुल गांधी ने नाटकीय अंदाज में झूठ के राजनीतिक अवतार मोदी को गले लगा लिया। इसे सामाजिक स्वीकार्यता भी मिली। शायद इस लिए भी क्योंकि भारत में ठगी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना खुद भारत। ठगी की परम्परा अलग अलग स्वरूप में अलग अलग वर्ग में फलती फूलती रही है। इतिहास से होते हुए ठगी को आज के परिपेक्ष्य में देखने के लिए समाज की कुछ रोजमरा की सच्ची कहानियों से रुबरु होना जरूरी है।

समस्त भारत में ठगी के एक रूप को सामाजिक मान्यता प्राप्त रही है जिसे 'बहरूपिया' के नाम से आज का भी समाज जानता है। ये बहरूपिये भेष बदल कर ठगी करते आये हैं और समाज जानते समझते इन्हें बर्दाश्त करता रहा। साधु के भेष में दो बहरूपियों ने सन् 2014 में उत्तर प्रदेश जिला गोरखपुर के चांडी गाँव में एक ही परिवार के 6 लोगों की हत्या कर सारा घर लूट लिया था।

हरियाणा का मेवात जिला कट्टलू काटने के लिए पूरे भारत में मशहूर है। कट्टलू काटने के लिए किसी भी सोने सी दिखने वाली नकली ईंट या किसी अन्य 'चारा' इस्तेमाल में लाया जाता है और जब ग्राहक पैसों के साथ माल खरीदने आता है तो उसे लूट लिया जाता है। लूट का आलम ऐसा है कि कारों और मोटरसाइकलों से लदे ट्रक के ट्रक तक आज भी इस इलाके में लूटे जाते हैं और किर उसी शोहरत की आड़ में माल बेचने के नाम पर बार-बार किसी न किसी को लूटा जाता है। प्रशासन आज तक इस लूट को रोक पाने में नाकाम है।

दिलीप कुमार और वैजयन्ती माला के अधिनय से संजी 1968 की फिल्म 'संघर्ष' में बनारस के पंडिं की ठगी का सजीव चित्रण किया गया है। इसे आज के भारत में मथुरा, पुष्कर, अजमेर शरीफ, और बनारस जैसे धार्मिक स्थलों पर खुले तौर पर देखा जा सकता है, कैसे विदेशी पर्यटक और घरेलू पर्यटकों को धर्म के नाम पर मंदिरों और मस्जिदों में संगठित रूप से ठग जाता है और इस धंधे को सामाजिक एवं राजनैतिक संरक्षण भी प्राप्त है, जिसके

लिए कल्प करना भी आम बात है। सरकारी तंत्र ने धर्म के नाम की ठगी को आस्था, संस्कार सरीखे टीवी चैनलों के माध्यम से करने का लाइसेंस भी दिया हुआ है, जहाँ कोई निर्मल बाबा गोलगप्पे को लाल चटनी से खाने की सलाह भर से कटलू कट लेता है।

65 वर्षीय रामकरण मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर से 30 किलोमीटर की दूरी पर बसे टेकनपुर गाँव में खेती का काम करते हैं। दो वर्ष पहले एयरटेल का मोबाइल नंबर लिया और न जाने कैसे एक कॉलर ट्यून खुद ही बजने लगी और अब हर माह 30 रुपये कट जाते हैं। 24 वर्षीय संजीव टेकनपुर में ही बीएसएफ के ट्रैनिंग अकादमी के बैरा का काम करते हैं, उनके आइडिया के फोन नंबर से रोज 5 रुपये खुद ब खुद कट जाते हैं। उपभोक्ता सेवा केंद्र में फोन लगा 10 मिनट तक जद्दोजहद करने पर पता चला कि इस समस्या से निजात पाने के लिए 3 रुपये प्रति मिनट की दर से उनके 30 रुपये कट चुके हैं। अर्थात् अब ठगी का मोदीकरण यानी डीजीटीकरण हो चुका है।



ऐसी कहानियाँ आपको आये दिन अखबारों और अपने आस पड़ोस से सुनने को मिल जाएंगी। कई बार हम गलियों सड़कों पर पकड़े जाने वाले ठगों को भीड़ के हवाले कर उनकी जान ले बैठते हैं और ल्वित न्याय प्राप्ति हो जाने की अनुभूति भी करते हैं। ग्राम पंचायतें नंगा कर मुंह काला करती हैं और पोल से बाँध कर जान ले लेती हैं।

ऐसा ही भीड़ तंत्र तब कहाँ चला जाता है जब बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ मोबाइल डाटा, गोरा बनाने की ऋति, वजन कम करने की चाच्य, श्री लक्ष्मी यन्त्र के नाम पर अमीर बनाने का लालच देती हैं। रामदेव सरीखे भगवा व्यापारी राष्ट्रवाद के नाम पर ठगते हैं? क्यों सामाज इन ठगों की करतूतों पर भीड़ इकट्ठी नहीं करता?

गंभीर विषय है कि भारत का संविधान एक तरफ अंधविश्वास को रोकने के लिए नीति निर्देशक सिद्धांत की बात करता है तो वही अनुच्छेद 51 (क) मौलिक कर्तव्य के रूप में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रसारित करने की बात करता है। पर हमारी सरकारें बाकायदा टीवी चैनलों पर बाबाओं को ठगाने और कंपनियों को आपको भ्रामक प्रचार से लूटने की छोट देती हैं। ये सुव्यवस्थित ठगी के व्यवसाय सरकारों

मेरे खुद के अनुभव से ठगी को जानें

इसी वर्ष के जनवरी माह की कड़कती ठण्ड में दिल्ली के मुखर्जी नगर इलाके में एक 80 वर्षीय बुजुर्ग, हाथ और चौहरे पर सफेदी के छीटे, कपड़े तार तार और पैर में टटे जूते, अचानक मिर्गी के दौरे का आघात और मुंह के बल सड़क पर गिरता है। 25 गज के मुर्गी के दरबों वाले घरों से निकल कर भीड़ उसे घेर खड़ी है। यानी का स्पर्श मिलते ही बुजुर्ग होश में आता है और उसकी व्यथा सुन मेरे समेत सबके द्या का भण्डार कुछ ऐसा खुला कि उत्तराखण्ड के गढ़वाल तक जाने का किराया, खाना और कपड़ों तक की व्यवस्था हो गई। शाम को फिर वही व्यक्ति किसी दूसरी गली में ठीक पहले जैसे ही बेहोश पड़ा मिला और माजरा साफ था कि ये भी एक ठग है। मेरे ऋध की सीमा पार होने ही वाली थी कि ये सोच कर ठिक गया, क्या कारण होंगे जो एक 80 वर्षीय बुजुर्ग व्यक्ति को ये मार्ग अपनाना पड़ा होगा? और उसे वहाँ से चुपचाप अपना माल समेत चले जाने के लिए मैंने कहा।

और मीडिया की आव के साधन हैं और वे खुद भी इस ठगी में शामिल हैं।

नोटबंदी जैसी ठगी खुद भारत सरकार ने की और इसके बावजूद समाज का एक बड़ा वर्ग इससे खुश है तो समझा जा सकता है कैसे समाज को सब ठग अपने अपने वर्ग के मुताबिक लूटने में सफल रहे हैं। इनसे न्याय दिला पाना न्यायालयों के लिए भी गैरजस्ती जान पड़ता है। पर, सड़क के ठग को सजा देने के लिए भीड़ जमा होती ही है क्योंकि वो व्यवस्थित लूट का हिस्सा

कम और व्यक्तिगत लूट का ज्यादा होता है। अंत में पाठकों के लिए एक सवाल कि क्यों 32 के 32 गुण मिला कर विवाह करने वाले पंडित को विवाह के विफल होने के उपरान्त भी हम अगले विवाह को तय करने के लिए आमंत्रित करते हैं? उसके लिए उपभोक्ता अदालत में या जिला न्यायालय में मुकदमा दायर किया जाना चाहिए या त्वरित न्याय के लिए भीड़ तंत्र के हवाले कर देना चाहिए?

कुछ भी कहिये, झूठ को झप्पी पाने वाला 'गप्पू' तो नहीं हो सकता!

जंग एक पत्रकार के इंसाफ के लिए जो उत्तराव रेपकांड सामने लाया था

मैं वीरेंद्र यादव उत्तराव जिले का रहने वाला हूँ और अभी तक न्यूज नेशन चैनल का पत्रकार था लेकिन मौजूदा समय में एक प्री लांसर पत्रकार हूँ और उत्तराव प्रेस क्लब का अध्यक्ष भी हूँ।

दरअसल मेरी ये लड़ाई उन सभी पत्रकार साथियों के लिए है जो दिन रात तपती धूप में बारिश में और कपा देने वाली ठंड में काम करके ना सिर्फ लोगों को इंसाफ दिलाते हैं बल्कि अपने संस्थान को भी उंचाईयों पर ले जाते हैं लेकिन हमारी इस कड़ी मेहनत के बाद हमारा संस्थान हमे देता क्या है? एक चपरासी से भी कम वेतन और तो और जब मन करता है तो अपने किसी फायदे के लिए हमे बाहर भी निकाल देता है। सवाल ये है कि आखिर कब तक हमारा ऐसा शोषण होता रहेगा?

ऐसी ही घटना हमारे साथ घटी! दरहस्त उत्तराव बीजेपी विधायक कुलदीप सिंह सेंगर रेप कांड मामले से आप सभी अवगत होंगे। इस खबर को सबसे पहले मैंने कवर करके पीड़िता की आवाज को उठाया था और चैनल पर खबर चलाई थी। इस खबर की कवरेज करने के दौरान विधायक के गुणों ने हमे जान से मारने की धमकी भी दी थी, लेकिन मैंने

बिना डरे निष्पक्षता से पीड़िता की आवाज और बीजेपी विधायक और उसके भाई की करतूत का सच, दुनिया के सामने लाया। चैनल ने भी खबर से खूब टीआरपी बटोरी और इस खबर ने सत्ता रुढ़ बलात्कारी विधायक और उसके भाई को जेल पहुंचा दिया, लेकिन मेरी इस खबर ने लखनऊ से लेकर दिल्ली में बैठी बीजेपी सरकार की जमकर किरकिरी हुई। नीतीजन विधायक से लेकर

मैं लगातार पूछता रहा—मेरा कसूर क्या है, लेकिन चैनल ने मेरी एक न सुनी। चाहता तो अन्य दूसरे चैनल जॉइन कर सकता था लेकिन मेरी अंतरात्मा ने कहा कि ये तो फ़ज़ी आरोपों को स्वीकारना होगा। आखिर कब तक हम पत्रकारों का शोषण होता रहेगा? कब तक ये मीडिया संस्थान हमारा इस्तेमाल करते रहेंगे और शासन सत्ता की रखौल बनकर काम करेंगे?

मेरी खबर पर तो सीबीआई की रिपोर्ट ने भी मुहर लगा दी तो फिर मेरा कसूर क्या है? क्यों मुझे सच दिखाने की सजा दी गयी? रेप पीड़िता को इंसाफ तो मिल गया मुझे कब मिलेगा? बस इन्ही कुछ सवालों के साथ मैं इस मुहिम को आगे बढ़ाना चाहता हूँ ताकि जो मेरे साथ हुआ, वो मेरे किसी अन्य भाई के साथ ना हो, इसलिए आप सभी से निवेदन है कि मेरी इस लड़ाई में मेरा साथ दे और इसको इतना शोषण करे कि उन संस्थानों को शर्मसार होना पड़े जो हम पत्रकारों को कंडोम समझते हैं और ऐसी सरकार का भी सच लोग जान सके जो अपने बलात्कारी विधायक पर कार्रवाही करने की हिम्मत ना जुटा सकी और एक पत्रकार की नौकरी छीन ली।

